Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

39

हबीब तनवीर के नाटकों में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति

सदानंदे नागेश रमेशराव
शोधार्थी
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय पुणे , महाराष्ट्र

प्रो डॉ बालासाहेब सोनवने
शोध निर्देशक
अरविंद तेलंग कॉलेज निगड़ी पुणे , महाराष्ट्र

शोध–सारांशः

हबीब तनवीर जी का नाम भारत के प्रसिद्ध निर्देशकों में लिया जाता है। इन्होंने स्व–रचित हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषा में कई नाटक लिखे जो केवल भारत में ही नहीं तो दुनिया भर के कई देशों में सफलता से मंचित हुए। हबीर तनवीर जी के अधिकांश नाटक उनके अपने मौलिक नाटक हैं, उन्होंने कई दूसरे नाटककारों की कृतियों को भी अपने मौलिक ढंग से प्रस्तुत किया है। हबीब तनवीर जी ने छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों के साथ हिंदी रंगमंच को एक नया आयाम दिया। जिसमें प्रमुखता से देखा जाये तो 'नए थियेटर' की नाट्य प्रस्तुतियाँ हिंदी नाटक और छत्तीसगढ़ी लोक शैलियों का अनोखा संगम है। प्रस्तुत शोधालेख में हबीब तनवीर जी के नाटकों में छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावनाः

रायपुर (छत्तीसगढ़) के बैजनाथपारा में 1 सितम्बर 1923 को हबीब अहमद खान का जन्म हुआ। उन्हें शायरी करने का शौक था इसलिए उन्होंने अपना उपनाम 'तनवीर' रखा। पटकथा लेखक, कवि, अभिनेता, गीतकार और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अद्वितीय कार्य किया। पद्मश्री (1983), पद्मभूषण (2002) जैसे पुरस्कार से सम्मानित हबीब तनवीर राज्यसभा के सदस्य भी रहे हैं।

साहित्य की अन्य विधाओं में से नाट्य विधा सबसे लोकप्रिय विधा कहलाती है। नाट्य विधा दृश्य और श्राव्य होने के कारण दर्शक सीधे इससे जुड़ जाते हैं। हबीब तनवीर जी के नाटकों की बात करे तो हबीब तनवीर जी ने छत्तीसगढ़ी लोक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए अपने कलाकारों के साथ नाटकों की रचना की। उन्होंने लगभग एक दर्जन से ज्यादा सफल नाटक हिंदी रंगमंच को दिये है। जिनमें 'चरन दास चोर' इस नाटक को तो फ्रांस के 'एडिनबरा आंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह' में सर्वश्रेष्ठ नाट्य प्रस्तुति का पुरस्कार मिला। इस नाटक के माध्यम से दुनिया भर में पहली बार भारतीय नाटक पहचाना गया। विशेषकर छत्तीसगढ़ की लोक रंग शैली को विश्व में एक नई पहचान मिली। इसके अलावा अन्य नाटकों में 'आगरा बाजार', 'एक और हिपेशिया भी थी', 'गाँव का नाँव ससुराल मोर नाँव दामाद', 'कामदेव का अपना बसंत ऋतु का सपना', 'जहरीली हवा' जैसे नाटक हैं। हबीब तनवीर जी ने बच्चों के लिए भी बाल नाटक 'पंचरंगी' नाम से प्रकाशित और मंचित किये हैं।

1954 में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में नज़ीर अकबराबादी की शायरी को केन्द्र में रखकर तैयार किया गया नाटक 'आगरा बाजार' से उन्हें एक अच्छे निर्देशक के रूप में मान्यता मिली। उसके परांत वह बड़े–बड़े कलाकारों के साथ इप्टा से जुड़कर कार्य करते रहे। 1955 में लंदन की 'रायल अकादमी ऑफ ड्रामेंटिक आर्टस' में प्रशिक्षण हेतु यूरोप गए और विभिन्न देशों में घूम–घूमकर नाटक देखा। तीन वर्षों तक पाश्चात्य रंग शैली से परिचित होने के बाद अपनी संस्कृति, परम्परा और ''मिट्टी की सुगंध को रंगमंच में प्रतिस्थापित करने का स्वप्न लेकर अपने देश वापस लौट गाए।[1] कुछ दिनों तक हिन्दुस्थानी थियेटर में काम करने के बाद अपने मित्रों और लोककलाकारों के साथ मिलकर 'नया थियेटर' की स्थापना की और रंगमंच के क्षेत्र में पीछे मुड़कर नहीं देखा। आज समकालीन रंगमंच के इतिहास में उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

प्रख्यात नाट्य समीक्षक गिरीश रस्तोगी का भी मानना है कि ''हमारी अपनी बड़ी ही सशक्त शास्त्रीय और नाट्य परम्पराएँ है और हबीब तनवीर ने थियेटर को शास्त्रीय और लोक परम्पराओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।''[2] समकालीन हिन्दी रंगमंच में उन्होंने हिन्दी नाटकों के अतिरिक्त कुछ अंग्रेजी नाटक और बच्चों के लिए बालनाटकों को साकार किया। उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य के नाटकों के साथ–साथ लोकगाथा पर आधारित नाटकों को लोकशैली प्रदान कर रंगमंच पर निर्देशित किया। वस्तुतः ''छत्तीसगढ़ अंचल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि उनकी मंचीय सर्जना की गंगोत्री है।''[3] वह, स्वयं मानते है कि किसी भी नाटक की सफलता के लिए उसमें अपनी संस्कृति की छाप, अपनी जमीन की खुशबू का होना बहुत जरुरी है।''[4] छत्तीसगढ़ लोकनाट्य शैली के साथ भारतीय और पाश्चात्य रंग शैलियों के मिश्रण से ऐसे शिल्प और मुहावरे में अपने नाटक प्रस्तुत किया जिसे सारी दुनिया ने सराहा।

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

दरअसल संस्कृत नाटक हो या पाश्चात्य नाटक या फिर लोकगाथाओं पर आधारित नाटक, लोकधर्मिता का सुन्दर प्रयोग सभी जगह दिखलायी पड़ता है। ''उनके रंगकर्म में अज्लीरिया का संगीत भी है और कथाकलि की रंग परी भी। उनकी अभिनय पद्धति नाट्यशास्त्र के गोमुख से निकलती नजर आती है लेकिन उसमें ब्रेख्यिन पद्धति की भी झलक है। डंकन रॉस के सूत्र से वे विशुद्ध भारतीय पद्धति में प्रस्तुत करने का मार्ग खोज लेते है।''[5]

दरअसल हबीब तनवीर अपने नाटकों में खुलकर लोककलाओं का समन्वय करते हैं। छत्तीसगढ़ लोकगाथा, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकवाद्य, लोकभाषा और लोककलाकारों का बेहतरीन प्रयोग से वह छत्तीसगढ़ के मिट्टी की खुशबू और यहाँ की लोकसंस्कृति एवं परम्परा को आधुनिक रंगमंच में जोड़कर नयी बुलन्दियों तक पहुँचाते है। रंगमंच पर लोकशक्ति का चमत्कार उनके सभी नाटकों में दिखलायी पड़ता है। दरअसल वे ''आधुनिक में लोकतत्व का समावेश इतने पारदर्शी तरीके से करते है कि सब आर–आर नजर आता है।''[6] नामवर सिंह के मतानुसार, ''हबीब तनवीर के नाटकों में लोक की स्थानीयता का बहुत विराट स्वरूप है। वैज्ञानिक सोच के साथ परिमार्जित आधुनिक नाटक है।''[7]

वैसे अगर देखा जाए तो हबीब तनवीर के नाटकों में ''समकालीनता के साथ ही सामाजिक दृष्टि का विस्तार बहुत साफ और पारदर्शी ढंग से दिखायी देता है। लोकनाट्य की समृद्ध परम्परा उनके नाटकों में है लेकिन आज के सामाजिक यथार्थ के साथ अपनी जड़ों से अपनी परम्परा में गहरे जुड़े रहने के बाद भी उनके नाटक आधुनिक है।''[8] स्वयं हबीब भी स्पष्ट करते है कि ''मेरा नाटक लोकशैली, लोकअभिनेता, लोकअभिनेत्री और लोकसंगीत से तैयार किये हुए आधुनिक नाटक है। हमारे समय में जो महत्वपूर्ण प्रश्न है उन्हीं को मैंने अपने नाटकों में उठाया है।''[9]

समकालीन हिन्दी रंगमंच से छत्तीसगढ़ की लोकनाट्य शैली का उनकी नाटकों की विशिष्टता है। वह लोरिक–चंदा की प्रेमकहानी पर आधारित सोन सागर का मंचन हो या चोर की सच्चाई (विजयदान देथा) पर आधारित चरणदास दोर हो। गाँव के नाँव ससुराल और मोर नाँव दामाद में छत्तीसगढ़ी लोकगीत ददरिया, करमा और सोहर का खुबसूरत प्रयोग हो या हिरमा की अमर कहानी में रेलो, गौरा, पाटा, बिज्जा और बिहाव नृत्य का प्रयोग या फिर वेणी संहार में पडवानी, पोंगवा, पंडित में नाचा शैली, कामदेव का अपना वसंतऋतु के सपना में बांसगीत, चरणदास चोर में पंथी नृत्य, सोन सागर में चंदैनी गीत, आगरा बाजार में पंडवानी का प्रयोग के साथ ही छत्तीसगढ़ी लोकवाद्य के साथ उसका लोकधुनों का प्रयोग और लोक वेश–भूषा और लोकभाषा का बेहतरीन उपयोग हबीब तनवीर के द्वारा निर्देशित नाटकों की अनूठी पहचान है।

वस्तुतः रंग–संगीत रंगमंच का महत्वपूर्ण तत्व है। गीत और संगीत हबीब के नाटकों की आत्मा है। छत्तीसगढ़ी माटी से जुड़े गीत संगीत और नृत्य आधुनिक रंगमंच में स्थापित करने का श्रेय हबीब तनवीर को है उनके नाटकों में छत्तीसगढ़ी गीत चुलमाटी और तेलमाटी की धुनों की कोमल लोकबद्धता है तो ददरिया की रस वर्षा और सुआ गीत की लय के साथ पंडवानी, नाचा और पंथी नृत्य की छाप से अभिभूत हो जाता है।[10]

हबीब तनवीर के नाटकों की विशेषता यह है की मंचन में तामझाम की आवश्यकता नहीं होती। सेट वगैरह की झंझट नहीं होती। साधारण रूप में नाटकों का मंचन होता है। मंच सज्जा प्रतीकात्मक होती है। सहज एवं सरल प्रतीक होते हैं। यथार्थ परिवेश स्वयं उत्पन्न होता है। हबीब तनवीर जी अपने अनुभव संसार के बल पर वे प्रत्येक नाटक और उसके पात्रों पर अथक परिश्रम करते है। यही कारण है कि उनकी हर बात नई और ताजी लगती है। अतएव समग्र चिंतन के पश्चात यह कहना बिल्कुल उचित है कि छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति एवं लोकनाट्य परम्परा और समकालीन रंगकर्म में उसका खूबसूरत प्रयोग हबीब तनवीर की खासियत है। नाचा शैली का सुंदर समन्वय उनके नाटकों को विशेष बनाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ के सहज, सरल लोगों की स्वच्छंद लोकसंस्कृति और छत्तीसगढ़ी भाषा की मिठास को रंगमंच के माध्यम से विश्वविख्यात करने में हबीब तनवीर का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने छत्तीसगढ़ लोकसंस्कृति के साथ भारतीय और पाश्चात्य रंगशैलियों के मिश्रण से समकालीन रंगमंच को समृद्ध किया है। वस्तुतः हबीब तनवीर अपनी जड़ों से जुड़े हुए थे। जिसे वह उम्रभर रंगमंच पर निभाते भी रहे। इसीलिए पाश्चात्य रंग परम्पराके गंभीर अध्येता होने के बावजूद उनकी प्रस्तुतियों में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का सीधा साक्षात्कार होता है।

हबीब तनवीर जी के नाटकों को देखने के बाद हम यह कह सकते है की छत्तीसगढ़ी भाषा की मिठास उनके नाटकों को सहज, स्वाभाविक बनाती है। हबीब तनवीर जी के सभी नाटक वर्तमान समय में भी पूरी तरह प्रासंगिक है और इनमें छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति की भरमार है।

संदर्भ

1) भास्कर चंदावरकर–रंगसंगीत, कलावार्ता, जुलाई, सितम्बर 2006, पृ.13
2) गिरीश रस्तोगी–हिन्दी रंगमंच आंदोलन के अवरोधी तत्व, नया प्रतीक, जून 1975, पृ.12
3) महावीर अग्रवाल–प्रणति मंचीय सफर की आधी सदी, रंग संवाद, अक्टूबर–दिसम्बर 99
4) हबीब तनवीर–अपनी जमीन की महक ही अलग होती है, साक्षात्कार म.अग्र., सापेक्ष–47, पृ.124
5) नामवर सिंह–सार्थक प्रयोग के अग्रणी, साक्षात्कार म.अग्र., सापेक्ष–47, पृ.290
6) हबीब तनवीर–अपनी जमीन की महक ही अलग होती है, साक्षात्कार म.अग्र., सापेक्ष–47, पृ.32
7) नामवर सिंह–सार्थक प्रयोग के अग्रणी, साक्षात्कार म.अग्र., सापेक्ष–47, पृ.290
8) वही, पृष्ठ 290
9) हबीब तनवीर–अपनी जमीन की महक ही अलग होती है, साक्षात्कार म.अग्र., सापेक्ष–47, पृ.32
10) हबीब तनवीर–रास आएगा तनवीर इसी मुल्क का मौसम, सापेक्ष–47, पृ.60